मातृत्व में विभिन्न नारीवादी विचारधाराएँ

एम.फिल. स्त्री अध्ययन उपाधि के लिये प्रस्तुत

लघु-शोध प्रबंध

सत्र:- 2012-13

शोध निर्देशिका

सुप्रिया पाठक

(असिस्टेंट प्रोफेसर)

(एम.फिल., स्त्री अध्ययनविभाग)

शोधार्थी

ममता वाईकर

पंजी.सं.-2012/03/212/010

स्त्री अध्ययन विभाग

संस्कृति विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)

गांधी हिल्स, वर्धा- 442005 (महाराष्ट्र) भारत

अनुक्रमणिका

आभार

भूमिका 1-3अध्याय 1 शोध का परिचय 4-7

1.1 परिचय

1.2 परिकल्पना

1.3 शोध का उद्देश्य

1.4 शोध प्रविधि

1.5 साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय 2मातृत्व संबंधी अवधारणाएं 8-23

2.1 मातृत्व की ऐतिहासिकता

2.2वैध एवं अवैध मातृत्व का द्वंद

अध्याय 3मातृत्व संबंधी धार्मिक अवधारणाएं 24-38

3.1 हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म

3.2राष्ट्रवादी अवधारणा एवं मातृत्व

अध्याय 4 मातृत्व संबंधी नारीवादी दर्शन 39-59

4.1मातृत्व उदारवादी अवधारणा

4.2 पुनरूत्पादन की राजनीती : रेडिकल देर्शन

4.3 मातृत्व की बदलती अवधारणा

पुनरूत्पादन की नई तकनीक

4.4 किराए की कोख : गर्भाशय का बाजारीकरण

अध्याय 5 विश्लेषण60-67

सन्दर्भ ग्रंथ सूची 68-71

भूमिका

एक स्त्री माँ बनते समय ही अपनी माँ की भूमिका में आ जाती है। यह उसके जीवन का एक नया आरम्भ होता है। एक स्त्री के लिए माँ बनना पूरी तरह से यह एक सांस्कृतिक घटना है। प्राकृतिक रूप से सिर्फ उनकी यौनेच्छा है। पर क्या यही विडम्बना है कि प्राकृतिक अधिकारों का नाना कुतर्कों एवं सभ्य-बर्बर तरीकों से आज तक उसका दमन होते आया है। जबकि उसे माँ बनाने की सांस्कृति मर्दागनी व बर्बरता का नित विस्तार होते आया है। जबकि जनसंख्या समस्या उसका प्रमाण है। रतिक्रिया स्त्री के लिए आनन्दायी हो सकती है। पर इसका आभास तक नहीं होने दिया जाता है और सुष्टि के आदि युग से ही पुरूष को इस सुरत से वंचित रखता आया है। वह स्त्री को यौनआनन्द व उत्तेजित शान्ति का जरिया बनाकर उस पर गर्भ लादता रहा है। यदि एक लड़की में विशेष प्रकार की शिक्षा व शिक्षा मूल्य बोध प्रविष्ट कराया जाए और उसे बिल्कुल पुरूष के बराबर शिक्षा और ज्ञान के हर अनुशासन में लेने की छूट बनी रहे तो लड़की एक सफल या सुयोग्य मनुष्य बनने का विकल्प करेगी। न ही जनसंख्या-वृद्धि की घरेलू मशीन बनने एवं पुरूष-विशेष की दासी बनने की बाधता है।

"एक स्त्री के लिए माँ बनना उसकी चरम सार्थकता है आनन्दायक कृत्य है एवं पुण्यमयी घटना है आदि उसे कहा जाता है। एवं जो स्त्री माँ नहीं बन सकती है उसे बॉझ कुलटा आदि गालिया देकर सम्बोधित किया जाता है एवं उसे पितृसत्ता व्यवस्था में उसे थोड़ा स्थान भी नहीं दिया जाता है।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि माँ बनने की कितनी बड़ी कीमत एक स्त्री दैहिक स्तर पर चुका रही है। जहाँ बहुत ही खतरे सम्भावित है। वहां कौन सी स्त्री माँ बनने के लिए स्वेच्छा से तैयार हो जायेगी एक स्त्री के लिए नौ से दस महीने तक गर्भ ढ़ोते हुए ही क्या कोई कम परेशानी होती है। गर्भवती स्त्री को हमेशा भगवान भरोसे छोड़ दिया जाता है। हमारे जैसे कई देशों की स्थिति का तो कहना हे कि एक तो स्त्री के लिए गर्भ जन्य बोझ और पीड़ा आदि ऊपर से खान-पान दवा आदि की कमी रहती है और तीसरे ग्रहकार्य का भार भी होता है1 चौथी उस पर पवित्रता यानी पति की हर हवस के प्रति समर्पित होने का बोझ होता है। पाँचवे में प्रसव पीड़ा व प्रसव में मौत का डर रहता है। इतना सब कुछ सहने के बाद कौन सी स्त्री माँ बनना चाहेगी। व्यक्तित्व विकास सारे द्वारा बन्द होने के जहां खतरे है वहां कौन सी विचार वाली स्त्री गर्भाधान हेतु तैयार होगी। इसके लिए कोई भी सही बात तो यह है कि प्रकृतिक ने स्त्री को माँ बनने की क्षमता भर दी है। माँ बनने की इच्छा नहीं दी है। **स्त्री केवल माँ यानी जनन-मशीन एवं पालन ग्रह बनकर रह गई है।**

माँ बनते समय एक स्त्री के लिए यह तय है कि स्त्री अपनी देह, मन व आत्मा के स्तर से एक बड़ी किमत चुकाने को तैयार हो जाती है। उसका यह त्याग महान होता है। ऐसा त्याग करने या न करने के लिए वह स्वतंत्र है या नहीं है। परन्तु स्वतंत्रता शब्द का भी हम गलत अर्थ समझ बैठते है। ऐसा क्यों नहीं सोचा जाता है कि स्त्री की सन्तान इच्छा उसके स्वतंत्र मन स्वतंत्र चाह की जगह उस मन पर सदियों से जमाए गए पितृसत्तात्मक मूल्यों एवं मान्यताओं का एक विकार है जो बार-बार घटने से अब सहज प्रवृत्ति सा लग रहा है। क्या स्त्रियाँ स्वेच्छा से सती होती थी दुख यही है अब तक स्त्री से जबरन कराए गए हर त्याग का महिमामंडन किया गया है। इस प्रकार स्त्री का शोषण वैध बन गया है।

विवेकानन्द गांधी-विनोबा जैसे मनीषी और जैनेन्द्र जैसे साहित्यकार भी इन गलती से बच नहीं पाए है। इसी कन्या गर्भपात कराकर पुत्रवती होना चाहती है तो क्या यह भी उसका स्वतंत्र वरण है। क्या उसकी व्यक्तिगत इच्छा है व्यक्तिगत इच्छा तो तब होती है जब स्त्री व्यक्ति होती। स्त्री तो साधन बनी है, पुत्रोष्टि यज्ञ की परम्परा में पुत्र पैदा करने हिंसक दबाव उस पर है पुत्र न होने पर अमानवीय स्थिति में डाल दिये जाने का भय और पुत्र जन्म लेने पर प्रतिष्ठित-सुविधाजनक हो जाने का प्रलोभन उसे पुत्र के लिए पागल होने पर विवश करता है। अन्यथा कौन स्त्री अपनी ही उपकर्म करेगी। पितृसत्तात्मक संरचना में अधिकार की लड़ाई लड़ने एवं उसके ऊपर हुए जुल्मों के प्रतिशोध हेतु भी एक साधन तैयार करने के लिए स्त्री बेटा चाह सकती है। मेरा पुत्र राजा बने की चाह वाली कैकयी या सत्यवती बनने की परम्परा के सन्दर्भ को ठीक-ठाक समझने की जरूरत है। हक या बदले की लडाई में कई बार स्त्री बेटी भी चाह सकती है। पर ऐसा करना उसका दुस्साहसी कदम होगा। क्योंकि उसे अपना योग्य साधन बनाने में उसे काफी प्रयत्न करना होगा। इसलिए बेटी चाहना अच्छी स्थिति नहीं होगी।

प्रकृति ने स्त्री को प्रजनन-शक्ति देकर उसके उपयोग की स्वतंत्रता प्रदान की है। परन्तु सदियों से जमी पितृसत्तात्मक धर्म व समाज की व्यवस्थाओं ने मर्द को यौन सुख और बेटा देने के लिए उसकी इस स्वतंत्रता को छीन लिया तथा उसे प्रजनन-यन्त्र बनाकर रख दिया है। और आबादी वृद्धि की भी समस्या पैदा कर दी है।

माँ की महिमा बखानने में पागलपन एवं बेहोशी की हद तक कि गई संस्कृति का बड़ा घिनौना सच है। माँ बनना यदि सचमुच इतना पवित्र कर्म है अभिनन्दनीय है तो अनष्याही मांओ की अकल्पनीय-अमानवीय फजीहत समाज क्यों कर डालता है या तो उन्हें कुन्ती बनकर संतति-त्याग की जघन्यता को विवश होना पड़ता है। अथवा उन्हें खुद दुनिया से गुम होना पड़ता है या गुम कर दिया जाता है। माँ बनना यदि इतना ही प्रशस्त कर्म है तो कन्या जनमाने वाली स्त्रियाँ क्यों लांछित होती है। क्यों पोषण विहिन कर

दी जाती है। अथवा क्यों कन्या-वध या मादा भ्रणों के गर्भपात हेतु प्रताडित की जाती है। यदि माँ बनना इतनी की पुण्यमयी या चरमसार्थक घटना है तो मर्दों द्वारा बलात्कारी हादसों से गर्भवती की गई स्त्री को क्यों परेशान किया जाता है फिर उससे उत्पन्न उसकी संतान को भी उसी स्थिति में डाल दिया जाता है।

क्या बलात्कार के कारण यह दुत्कार है ? तब तो दुत्कार मर्द (बलात्कारी) का होना चाहिए था। यदि ऐसा ही है तो विवाह संस्था में उसी प्रकार के (परवैध) बलात्कार से गर्भवती बनी स्त्री को क्यों स्वीकार लिया जाता है। और यदि उसने बेटे को जन्म दिया तो क्यों जयकार होती है। उसकी इन सब बातों से एक ही अर्थ निकलता है कि स्त्री के माँ बनने की यह जयकार नहीं है बल्कि समाज द्वारा मान्यता प्राप्त किसी पुरूष की विशेष वैवाहिक मुहर (सिन्दुर) स्त्री द्वारा लगवाकर उसका वंश चलाने हेतु उसे बेटा देने की जयकार है। बाध्य और खंडित मातृत्व का यह गौरव भला कौन सा गौरव है। यह स्वंय वरण किया हुआ है। यह मातृत्व नहीं है कि किसी हद तक आत्मा गरिमा का उदय भी हो स्त्री में।

स्त्री का माँ बनना पुरूष (पति) द्वारा थोपी गई अंधी हवस स्त्री (पत्नी) की गलत सामाजिक संरचना की मजबूरी एवं कुशिक्षा से बनी लतखोरी प्रवृत्ति का नतीजा है पुरूष इसलिए विवाह करता है क्योंकि स्त्री उसके लिए साधन मात्र ही है। विवाह का उद्देश्य बेटा पैदा करना है ताकि पुरूष का वंश चले। स्त्री और कुछ नहीं है। पुत्र परम्परा जारी रखने की मशीन है।

प्रस्तुत शोध विषय मातृत्व में विभिन्न नारीवादी विचारधाराएँ में शोधार्थी द्वारा अध्ययन को व्यवस्थित करने के द्रष्टिकोण से इसे विभिन्न अध्यायों में विभाजित किया गया है। ताकि इस कार्य को अधिक सुचारू एवं बोधगम्य बनाया जा सके। पूरे शोध को पांच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत शोध की परिकल्पना एवं उद्देश्य तथा शोध की प्रविधि पर चर्चा की गई है इसके अतिरिक्त इस शोध के अन्तर्गत जिन पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं के आलेखों का सहारा लिया गया है। उनके विश्लेष का प्रयास इस अध्याय का ध्येय है। द्वितीय अध्याय मातृत्व की सैद्धान्तिक प्रष्ठभूमि से संबंधित है। इसके अतंर्गत मातृत्व संबंधी अवधारणाएँ एवं मातृत्व की ऐतिहासिकता एवं वैध एवं अवैध मातृत्व का द्वन्द्व आदि का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के तीसरे अध्याय में मातृत्व संबंधी नारीवादी दर्शन पर केंद्रित है इससे मातृत्व की उदारवादी अवधारणा एवं पुनरूत्पादन की राजनीति रेडिकल दर्शन मातृत्व की बदलती अवधारणा पुर्नउत्पादन की नई तकनीक एवं किराए की कोख गर्भाशय का बाजारीकरण का विश्लेषण अध्ययन किया गया है।

अध्याय पांच में शोधार्थी द्वारा विश्लेषण एवं निष्कर्ष का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इसके बाद संदर्भ सूची में शोध के दौरान प्रयोग में लाई गई पुस्तकों की सूची दी गई है।

पंचमअध्याय : विश्लेषण

अपने समस्त शोध कार्य के दौरान मैंने मातृत्व की अवधारणा को एक सैद्धांतिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक-परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास किया मातृत्च वस्तुत: स्त्री के शरीर के साथ जुड़ी एक नैसर्गिक अवस्था है परन्तु स्त्री के दृष्टि से यदि मातृत्व का अध्ययन किया जाये तो कई मतान्तर स्पष्ट होते हैं।

इस पूरे शोध को सुचारू रूप प्रदान करने एवं मातृत्व की जटिलताओं को समझने के दृष्टिकोण से इसे चार भागो में विभाजित किया गया है। शोध की प्रथम भाग के अंतर्गत मातृत्व से जुड़ी सैद्धांतिक पृष्ठभूमि को तलाशने का प्रयास किया गया जिसके अंतर्गत इस शोध का उद्देश्य तथा इस विषय पर अब तक हुए विभिन्न विधतापूर्ण शोध पुस्तके, लेख, रिपोर्ट इत्यादि का विस्तार पूर्वक पुनरावलोकन किया गया।

एवं समस्त कार्यों के आलेख में प्रस्तुत शोध विषय की रूपरेखा तैयार की गई। शोध के द्वितीय भाग के अंतर्गत मातृत्व संबंधी विभिन्न अवधारणाओं जैसे मातृत्व की सैद्धांतिकता को तलाशने का प्रयास किया गया जिसने प्रसिद्ध विचारक ऐंगल्स ने अपनी महत्वपूर्ण कृति में परिवार निजी संपत्ति एवं राज्य की उत्पत्ति में स्त्री की अधीनता के इतिहास को रेखांकित किया है। तथा वैध एवं अवैध मातृत्व के द्वंद्व को तलाशने का प्रयास किया गया जिसमें बताया है कि माँ तो कोई भी स्त्री बन सकती है एक स्त्री शादी के पहले भी माँ बन सकती है एवं शादी के बाद में भी।

"कुंती को विवाह के पूर्व बच्चे की प्राप्ति हुई थी इसलिए वह विशिष्ट रूप से अवैध माँ कहलायी थी। एवं कुंती को विवाह के बाद जो बच्चों की प्राप्ति हुई तब वह वैध माता कहलायी थी।"

शोध के तीसरे अध्याय के अंतर्गत मातृत्व संबंधी धार्मिक अवधारणा जैसे हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म को भी तलाशने का प्रयास किया गया है जिसके अंतर्गत बताया है भारत की सामाजिक मान्यताओं और परम्पराओं को धार्मिक बंधनों ने जकड़ दिया गया है। नारी समस्या इन ही बुराइयों की देन है यदि एक स्त्री पुत्री को जन्म देती है तो माता को प्रताडित किया जाना भी धार्मिक मान्यता की ही देन है।

"धर्म के नाम पर आज भी विधवा स्त्रियों को काशी वाराणसी के आश्रमों में भेजा जाता है जहाँ उन्हें धर्म कर्म करने की हिदायते दी जाती है तथा दो वक्त की रोटी के लिए पूरे दिन जप कराये जाते है तथा उनका और यौन शोषण किया जाता है।"

मातृत्व संबंधी राष्ट्रवादी अवधारणा में गांधी जी ने महिलाओं को राष्ट्रीय आंदोलन में ये शामिल होने के लिए मजबूर किया था और राष्ट्रीय आंदोलन में गांधी जी के आने से राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं के विषय में बदली थी।

शोध के चौथे अध्याय में मातृत्व संबंधी नारीवादी दर्शन में उदारवादी नारीवादी मानता है कि महिलाओं को प्रजनन का अधिकार होना चाहिए एवं गर्भपात की सुविधा भी होनी चाहिए बच्चों के लालन पालन की सुविधा एवं स्वास्थ्य की सुविधा का हर लाभ मिलना चाहिए।

मातृत्व संबंधी पुनरुत्पादन की राजनीति बताया है कि सीमोन बोउवार कहती है कि बचपन से लड़कियों को कहा जाता है कि तुमको संतानोत्पत्ति करनी है एवं मातृत्व का सौभाग्य है कि वे संसार में शिशुओं को जन्म देती है। तथा मातृत्व की बदलती अवधारणा में पुनउर्त्पादन की नई-नई तकनीको का आविष्कार हुआ है तथा 1970 के दशक में सुलामिथ फायरस्टोन द्वारा प्रजनन की तकनीक की स्त्री मुक्ति की संभावना के रूप में देखा गया है।

किराए की कोख: गर्भाशय का बाजारीकरण की विस्तृत रूप से विवेचना की गई और बताया है कि आज के परिप्रेक्ष्य में स्त्री के गर्भाशय की भी खरीद बिक्री हो रही है कुछ स्त्रियां गरीबी के कारण एवं कुछ बच्चों के पालन पोषण के लिए माँ बनने को तैयार हो जाती है। एवं कुछ स्त्रियों का तो यह व्यवसाय ही होता है।

इन समस्त अध्यायों के अध्ययन करने के उपरांत यह बात स्पष्ट होती है कि प्राचीन काल से लेकर अब तक मातृत्च को लेकर विभिन्न अवधारणा काम करती रही जिनका तात्कालिन सामाजिक परिप्रेक्ष्य के साथ गहरा संबंध था। प्रसिद्ध विचारक ऐंगल्स ने अपनी महत्वपूर्ण कृति परिवार निजी सम्पत्ति एवं राज्य की उत्पत्ति के संदर्भ में परिवार के बनने की ऐतिहासिक विवेचना की गई। इस क्रम में उन्होंने स्त्री की यौनिकता

पर मातृत्व के माध्यम से नियंत्रण किए जाने को व्याख्यित करते हुए कहा था माँ बनना औरतों की ऐतिहासि हार थी।

इस क्रम में उन्होंने निजी संपत्ति राज्य एवं परिवार के मध्य पितृसत्तात्मक संबंधों कोभी तलाशने का प्रयास किया था। अंतत: मेरा यह निष्कर्ष निकलता है कि माँ की ही क्यों जिम्मेदारी बनती है कि वह बच्चों का पालन पोषण करे। बच्चे तो माता-पिता दोनो के ही होते है। इसलिए दोनों को मिलकर ही बच्चो की देखरेख करनी चाहिए एवं हमेशा ही पति पत्नी का रिश्ता बराबरी का होना चाहिए और इन दोनों को एक दूसरे की भावनाओं का ध्यान रखना और इनके बीच हमेशा ही तुच्छता एवं श्रेष्ठता का भाव नहीं आना चाहिए। एक स्त्री के लिए हमेशा ही उसकी प्रजनन संबंधी स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह कितने बच्चा पैदा करे या न करने उसे ये खुद का ही अधिकार होना चाहिए। एवं उत्पादन के कार्यो में भी स्त्री एवं पुरुषों को बराबरी का अधिकार होना चाहिए।

स्त्री को विभिन्न रूपों में नवाजा जाता है स्त्री को देखते ही कहते है कि स्त्री मातृत्व की देवी है। लेकिन क्या मातृत्व की जिम्मेदारी सिर्फ अकेले स्त्री पर है यह एक ऐसा सवाल है कि जिसमें पुरूष स्त्री पर हावी होता है।

प्राचीन काल से लेकर आज तक के समय में मातृत्व कि विभिन्न ऐसी अवधारणा बना है। जिससे कि स्त्री को बचपन से ही कुशल ग्रहणी अच्छी पत्नी और ममतायी माँ बनने के उपदेश दिये जाते है और कहा जाता है कि माँ बनना दुनिया की सुंदर और सुखद अनुभूति होती है यह बात हमारा पितृसत्तात्मक समाज बचपन से ही यह बात दिमाग में बैठा देता है मेरा कहना है कि एक स्त्री की ही क्यों जिम्मेदारी होती है कि वह बच्चों का पालन-पोषण करे बच्चे तो माता-पिता दोनों के होते है। इसलिए उन दोनों का ही कर्तव्य होता है कि बच्चों की देखरेख करें।

प्रकृति ने स्त्री को गर्भ देकर बच्चे को जन्म देने योग्य तो बनाया है पर यिद एक स्त्री माँ नहीं बनाना चाहेगी तो क्या अधूरी है। हमेशा पुरूषवादी समाज को माँ की ही कोख ही क्यों दिखाई देती है। उसे हमेशा

एक स्त्री का दिमाग क्यों नहीं दिखाई देता है। स्त्री को हमेशा आजादी क्यों नहीं है कि वह माँ बनने का निर्णय भी ले सकती है। क्यों एक स्त्री को अपने शरीर पर खुद का अधिकार नहीं है।

स्त्री घर के सारे करम करती है एवं बच्चों के पालन-पोषण करना खाना पकाना साफ- सफाई करना बुर्जुगों के देखरेख करना आदि सारे काम करने के बाद भी औरतों को इस काम का मूल्य क्यों नहीं दिया जाता है।

हमेशा ही पति पत्नी का रिश्ता बराबरी का होना चाहिए और इन दोनों को एक-दूसरे की भावनाओं का ध्यान रखना चाहिए और इनके बीच हमेशा ही तुच्छता एवं श्रेष्ठता का भाव नहीं आना चाहिए।

हमेशा ही एक लड़की जन्म लेती ही क्यों भेदभाव की शिकार हो जाती है। जहां उसका पालन-पोषण शिक्षा आदि में भी लड़को की अपेक्षा उसके साथ भेदभाव क्यों किया जाता है उसे क्यों उसे घूमने-फिरने का अधिकार नहीं दिया जाता है उसे बचपन से ही पुरूष द्वारा शोषित होने के लिए क्यों तैयार किया जाता है।

एक स्त्री बचपन से ही पिता के अधीन रहती है एवं विवाह के बाद पति के अधीन और जब स्त्री बूढ़ी हो जाती है तो पुत्र के अधीन रहती है क्यों उसे स्वतंत्र रहने का अधिकार नहीं है।

स्त्री जहाँ भी रहे उसे स्वतंत्र जीवन जीने का अधिकार नहीं है।नारी अपने आप को असुरक्षित है हमेशा उसे जिदंगी जीने के लिए उसे पुरूष का साथ नहीं सहारा होना चाहिए होता है इसीलिए स्त्री हमेशा दुर्बल पड़ जाती है हमेशा सहारा खोजने वाले हाथ बराबरी कैसे हासिल कर सकते है। सहारा हमेशा ही एक तरफा नहीं होता है पुरूष को भी स्त्री के सहारे की असवश्यक होगा। नारी को यह बात जानना और समझना आवश्यक होगा। नारी केवल सहारा ना मांगे। साथ ही पुरूष से वह साथ और मित्रता भी जुटाए तो रूटियों के बंधन हमेशा के लिए खत्म हो जायेगे।

हमेशा ही लड़कियों का ऐसा सामाजिकरण किया जाता है कि बचपन से ही उसे गुड़िया देकर स्कूल में चर्च में मीडिया द्वारा मातृत्व का गुणनान किया गया है।

नारीवादियों ने हमेशा ये बात कही थी पितृसत्ता तो संस्था है वो मनुष्य रूप से हत्याचारी है ना निजी तौर पर पुरूष अत्याचारी नहीं है। ये परिवार नारी मां को इनकी अधीनता का कारण मानते है नारी की इन गुलामी की बेडियों को तोड़ने के लिए एकल परिवार के स्थान पर सामुदायिक परिवार की वकालत करते है। हमेशा से महिलाओं को ये विश्वास होना चाहिए कि उन्हें खुद की यौन प्राथमिकता चुनने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

माँ तो कोई भी स्त्री बन सकती है। एक स्त्री शादी के पहले भी माँ बन सकती है। एवं विवाह के बाद भी माँ बन सकती है। इसलिए औरत को कुन्ती बनना पड़ता है। इसलिए धर्मशास्त्र में स्त्री को माँ यानी पुत्रवती बनने के गुण गाए जाते है। भारत की सामाजिक मान्यताओं और परम्पराओं को भी धार्मिक बंधनों में जकड़ दिया जाता गया है। नारी समस्याइन्ही बुराइयों की देन है यदि एक स्त्री पुत्री को जन्म देती है तो भी माता को प्रताडित किया जाना भी धार्मिक मान्यता की ही देन है और धर्म में हमेशा से भी कहा जाता है कि पुत्र ही परिवार को मोक्ष प्रदान करेगा। हमेशा से यही उद्देश्य रहा है कि स्त्री बेटा पैदा करे ताकि उनका पुरूष कर वंश चले। पुरूष की नजरों में स्त्री कुछ नहीं है बस परम्परा जारी रखने की एक मशीन है।

देवदासी में भी हमने देखा कि देवताओं की दासी के साथ कैसा व्यवहार किया जाता था देवदासी को मन्दिरों में नाचना गाना पड़ता था एवं बाहर से आये मेहमानों के साथ शयन करना पड़ता था। इनके बदले उन्हें अजान दिया जाता था।

पर मैं पूछती हूँ कि जब कमजोर से कमजोर पुरूष भी अपनी स्त्री को दूसरे के साथ नहीं देख सकता तो फिर यह कैसे देवता है जो देवदासी को दूसरों के साथ कैसे बर्दाशत करते है विकसित हो चुका है कि मनुष्य के पास अपना हृदय तक भी नहीं बचा है।

आज के बदलते परिवेश तथा तेज रफ्तार से भागती जिन्दगी एवं उत्तर आधुनिक जीवन शैली में कामकाजी महिलाओं के पास इतना समय नहीं है कि ये माँ बनाने के लिए अपने कैरियर को दॉव पर लगाने का जोखिम उठाएँ अगर कुछ पैसे खर्च कराने से कोख किराए पर मिल जाती है तो इसके परेशानी ही क्या है।

यदि एक स्त्री किसी घातक बीमारी के कारण अपना बच्चा पैदा करने में असमर्थ होती है तो वह किसी भी दूसरी औरत की कोख किराए पर ले सकती है। कोख किराए पर देने वाली स्त्री को सरोगेट मदर कहा जाता है।

आज के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो स्त्री के गर्भाशय की भी खरीद-बिक्री हो रही है। कुछ स्त्रियों गरीबी के कारण एवं अपने बच्चों के लालन-पालन एवं भरण पोषण के लिए माँ बनने को तैयार हो जाती है। एवं कुछ स्त्रियों का तो यह व्यवसाय ही होता है।

कहते हैं के माँ बनने जैसा सुख शायद दुनिया में कोई और नहीं है। नारी शक्ति स्वरूपा है घर-परिवार का वातावरण उसी के आचरण पर निर्भर करता है। नारी जन्मदात्री ही नहीं।

हमारे देश में गर्भापात 1972 ई.में वैध बन गया था पर आज तक विशाल रास्ते व बंर्बर ढ़ंग से कसाईयों के हाथ गर्भपात कराने को मजबूर है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हल साल 15-19 बर्ष की 50 लाख लड़कियां असुरक्षित गर्भपात के लिए मजबूर है। एक तरफ माँ बनने के लिए माँ को महिमामंडित किया जा रहा है एवं एक तरफ गर्भपात निरोध , गर्भपात पर निषेध की परम्परा है। इसकी गिरफ्त में स्त्रियों का एक बड़ा वर्ग है। पुरूषवादी पाखंड देखिये कि प्राचीन समय से ही अपने हित के लिए गर्भ गिराने की विधियों का प्रयोग होता रहा है।

एक स्त्री के लिए हमेशा ही अपने प्रजनन संबंधी स्वतंत्रता होनी चाहिए वह बच्चा पैदा करे या कितने बच्चे पैछा करे या ना करे उसे ये खुद अिधकार होना चाहिए। पुरूष को हमेशा ही एक दिन के भ्रुण में भी उन्हें दिखता है। परन्तु एक जिन्दा स्त्री में उन्हें जीवन का अंश क्यों नहीं दिखता है। एक स्त्री हमेशा बच्चा दर बच्चा जन्म देती एक स्त्री पूरी तरीके पीड़ा से कोई फर्क क्यों नहीं पड़ता है।

मातृत्व स्त्री की परिपूर्णता है लेकिन अगर उसी मातृत्व को व्यापार बना दिया जाए तो वह सृष्टि विधाता के साथ गन्दा और भद्दा मजाक क्या हो सकता है।

वह बच्चों का पालन पोषण भी करती है। माता के द्वारा ही बच्चों को जो संस्कार दिये जाते है। उन्हीं के द्वारा बच्चें उनका मार्गदर्शन करते है। स्त्री जीवन का महान उद्देश्य माता का गौरवमय बंद प्राप्त

करना ही है गर्भ धारण, प्रजनन और बच्चों का पालन पोषण के अत्यंत तहत्वपूर्ण कार्य प्रकृति ने स्त्री को ही सौंप है नारी की सबसे बड़ी गरिमा उसकी जननी पद में निहित है। एक नारी व्यक्ति समाज तथा राष्ट्र की जननी ही नहीं वह जगजननी भी है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. ओरियाना फ्लासी, *एक खत अजन्मे बच्चे के नाम*, मेरठ, संवाद प्रकाशन. 2006
2. आर्य, साधना, मेनन, निवेदिता, निजी लोकनीता, *''नारीवादी राजनीति संघर्ष एवं मुद्दे''* नई दिल्ली, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय.
3. मिश्र, डॉ.अरूणकुमार : ''कन्या वामा जननी'' दिल्ली राधाकृष्ण प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड .
4. अनु. खेतान डॉ. प्रभा सीमान द बोउवार *स्त्री : उपेक्षिता* हिन्दी पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड
5. प्रसाद प्रो. कमला, शर्मा राजेन्द्र :स्त्री मुक्ति का सपना,
6. जोशी, डॉ. गोपा : *भारत में स्त्री असमानता*, हिन्दी माध्यम कार्यन्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली।
7. चौहान किसन सिंह, *माँ का दिल* मेधा बुक्स एक्स, (2010)
8. तलसीमा नसरीन, *औरत के हक में*, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली (2007)
9. रेणुका नैयर, *औरत की पीड़ा,* प्रकाशन, अभिषेक पब्लिकेशन्ज
10. रेणु दिवान, *आंदोलन की महिलाए,*एजुकेशन बुक सर्विस नई दिल्ली
11. रमा शर्मा, एम. के. मिश्रा, *महिलाओं के कानूनी धार्मिक एवं सामाजिक अधिकार,* अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस 4831/24 प्रहलाक गली अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली-(2010)
12. प्रियदर्शनी विजयश्री, देवदासी या धार्मिक वेश्या एक पुनर्विचार, वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए दरियागंज, नयी दिल्ली- वाणी प्रकाशन, अशोकराज पथ (पटना कॉजेज के सामने) पटना (बिहार) 2010
13. डॉ. एम.एम. लवनिया, भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र रिसर्च पब्लिकेशन्स, 89 प्रीपोला बाजार जयपुर-2

14. शाहिद अमीन ज्ञानेन्द्र पांडेय, निम्नवर्गीय प्रसंग, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. 1-वी नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली- (2002)
15. रवीन्द्र कुमार पाठक, जनसंख्या समस्या के स्त्री पाठ के रास्ते राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. 7/31 अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली- (2010)
16. Jyotsna Agnihotri gupta] news Reproductive technologies women's Health and autonomy, sage publications India P.V.T. Ltd. M-32 market greater kailash-I new delhi- (2000)
17. कुसुम त्रिपाठी, जब स्त्रियें ने इतिहास रचा, प्रकाशक नवजागरण प्रकाशन ,द्वारा सुधीर ढवले, मिसाल ले-आऊट, वैशाली स्कूल के पास परिपटका, नागपुर- (2004)
18. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' महाभारत, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. 1-बी नेताजी सुभाष मार्ग दरियागंज नई दिल्ली-(1978)
19. Jacobson J.L.(1932) coerced motherhood : the global Dimensions, world watch In stiute] Washington
20. Jacobson J.L.(1990) the status of family planning in developing countries, in Wallace and Kantieds (1990) PP.191-203
21. Kamala ganesh, mother who is not a mother in search of the great India Goddess
22. Reproductive rights and surroget mother : A feminist prespective
23. Sukumari Bhatrachrji, motherhood in Ancient India.
24. लुइज ब्राउन, यौन दासियाँ, एशिया का सेक्स बाजार वाणी प्रकाशन 21-ए दरियागंज नयी दिल्ली- (2005)
25. कुसुम त्रिपाठी, स्त्री अस्मिता के सौ साल, (भाग-1), संस्कार साहित्य-माला 407, कृष्णा बिहार, डाटा कम्पाउंड इर्ला ब्रिज, एस.वि रोड अंधेरी(प.) मुंबई- (2010)

26. रमेश उपाध्याय, आज का स्त्री आंदोलन, अंकित उपाध्याय द्वारा शब्द संधान प्रकाशन, बी-1/18 ए, पश्चिम बिहार, नयी दिल्ली (2004)
27. डग लॉरिमर, ऐतिहासिक भौतिकवाद के मूल सिद्धांत श्याम बिहारी राय द्वारा ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, बी-7 कॉम्लेक्स सुभाष चौक लक्ष्मी नगर दिल्ली से प्रकाशित तथा नालंदा ग्राफिक्स, दिल्ली (2006)
28. कृष्ण मोहन श्रीमाली, धर्मसमाज और संस्कृति श्यामबिहारी राय ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड के लिए बी-7 सरस्वती कामप्लेक्स, लक्ष्मी नगर दिल्ली- से प्राकाशित तथा क्वालिटी प्रिंटर्स ईस्ट ज्योति नगर दिल्ली- (2005)
29. पं. रमाबाई, हिन्दू स्त्री का जीवन संवाद प्रकाशन आई-499 शास्त्रीनगर, मेरठ-(उ.प्र.) (2006)
30. उत्तम कांबले, देवदासी, प्रकाशन, आई-499 शास्त्रीनगर, मेरठ- (उ.प्र.) फरवरी (2008)